केवल आन्तरिक वितरण हेतु

परिसर समाचार

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर–263145, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखण्ड

वर्ष : 3, अंक : 19 पाक्षिक 01–15 सितम्बर, 2011

भारत रत्न गोविन्द बल्लभ पंत का 124वां जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया गया

दिनांक 10 सितम्बर, 2011 को विश्वविद्यालय में पंडित गोविन्द बल्लभ पंत की 124वीं जयंती धूमधाम से मनायी गयी। इस अवसर पर परिसर स्थित पंत पार्क में पंडित पंत की प्रतिमा पर कुलपति डा. बी.एस. बिष्ट तथा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद में पशुपालन तथा पशुचिकित्सा विज्ञान के उप महानिदेशक, डा. के.एम.एल. पाठक सहित विश्वविद्यालय के अधिष्ठाताओं, निदेशकों, अधिकारियों, कर्मचारियों ने माल्यार्पण किया। डा. रतन सिंह सभागार में आयोजित मुख्य समारोह में कुलपति डा. बिष्ट ने अन्य अधिकारियों, कर्मचारियों तथा अध्यापकों के साथ पं. गोविन्द बल्लभ पंत के छायाचित्र पर माल्यार्पण किया। इस अवसर पर समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में सम्बोधित करते हुए डा. बिष्ट ने पंतनगर विश्वविद्यालय की स्थापना में पंडित पंत के महत्वपूर्ण योगदानों का उल्लेख करते हुए उनको नमन किया। उन्होंने कहा कि महापुरूषों का जीवन मार्गदर्शक की तरह होता है, उनके रास्ते पर चल कर हम अपना एवं समाज का विकास कर सकते हैं। जिस प्रकार पंडित गोविन्द बल्लभ पंत ने उस दौर में व्याप्त जमींदारी प्रथा, अस्पृश्यता (छुवाछूत), दहेज प्रथा जैसी सामाजिक बुराईयों का उन्मूलन किया उसी प्रकार वर्तमान समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार को दूर करने का डा. बिष्ट ने आह्वान किया। उन्होंने विज्ञान एवं तकनीकी के क्षेत्र में वैश्विक परिवर्तनों को ध्यान में रखते हुए अगले 2030 तक पंतनगर विश्वविद्यालय के विकास के लिए नीति निर्धारण हेतु विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों, वैज्ञानिकों व विद्यार्थियों से गहन चिंतन करने की अपील की ताकि विश्वविद्यालय का भावी कार्यक्रम तैयार किया जा सके।

उप महानिदेशक पशुपालन, डा. पाठक, ने कहा कि गोविन्द बल्लभ पंत शिक्षा को विकास का साधन मानते थे। उन्होंने देश की आजादी और उसके विकास के लिए जो कार्य किया वह अविस्मर्णीय है। उन्हें अपना आदर्श मानते हुए हमें देश सेवा की राह में अग्रसर होना चाहिए। उन्होंने कहा कि पंतनगर विश्वविद्यालय के विद्यार्थी देश ही नहीं बल्कि विदेशों में भी अपनी योग्यता का परिचय दे रहे हैं। अधिष्ठाता, छात्र कल्याण, डा. ए.के. कर्नाटक ने गोविन्द बल्लभ पंत के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि वह उस जमाने के मेधावी छात्र रहे हैं जब इन्टरनेट तो दूर विद्यार्थियों को पुस्तकें भी आसानी से उपलब्ध नहीं होती थी। डा. कर्नाटक ने कहा कि पंडित पंत गांधी जी के बहुत बड़े समर्थक थे। उन्होंने विगत् 26 अगस्त से पंत भवन के छात्रों द्वारा पंत जयंती समारोह के आयोजन की जानकारी देने के साथ उन्होंने पंडित पंत के जन्म एवं जीवन से सम्बन्धित ऐतिहासिक तथ्यों जैसे उनके समय प्रबन्धन तथा सकरात्मक रूख आदि के बारे में बताया। कार्यक्रम के प्रारम्भ में विश्वविद्यालय गीत तथा बालनिलियम स्कूल के विद्यार्थियों द्वारा रामधुन प्रस्तुत की गयी। भारत रत्न गोविन्द बल्लभ पंत के जन्म दिवस के अवसर पर राष्ट्रपति तथा उपराष्ट्रपति द्वारा प्रेषित संदेश अधिष्ठाता गृह विज्ञान, डा. रीता रघुवंशी ने पढ़कर सुनाया। इसी क्रम में प्रधानमंत्री एवं मुख्यमंत्री का संदेश कुलसचिव, डा. जे. कुमार ने पढ़ा। इस अवसर पर बालनिलयम विद्यालय के विद्यार्थियों ने पंडित जी के जीवन तथा कार्यों पर भाषण व कविताएं प्रस्तुत की। इस अवसर पर पशुचिकित्सा एवं पशुपालन विज्ञान महाविद्यालय तथा अन्य

महाविद्यालयों के विद्यार्थियों ने रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। इस अवसर पर पंत भवन छात्रावास द्वारा पंत जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं, यथा वाद–विवाद, निबन्ध, कविता, चित्रकारी, भारोत्तोलन, कैरम, शतरंज, टेबिल टेनिस आदि के विजेताओं को कुलपति डा. बिष्ट के साथ कुलसचिव, डा. जे. कुमार, निदेशक संचार डा. वीर सिंह व अन्य अतिथियों ने पुरस्कार प्रदान किये। कार्यक्रम का संचालन अश्विना मदवाल तथा प्रतिभा जोशी ने किया।

हिन्दी दिवस का आयोजन

दिनांक 14 सितम्बर, 2011 को विश्वविद्यालय के प्रकाशन निदेशालय के तत्वावधान में आयोजित हिन्दी दिवस समारोह में राजभाषा हिन्दी को आत्मीयता का बोध कराने वाली भाषा बताते हुए वक्ताओं ने इसे समृद्ध बनाने की प्रतिबद्धता जताई। कार्यक्रम के दौरान हिन्दी सप्ताह के अंतर्गत आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के सफल प्रतिभागियों को सम्मानित भी किया गया। कृषि व्यवसाय प्रबंधन महाविद्यालय सभागार में आयोजित समारोह के मुख्य अतिथि कुलपति, डा. बी.एस. बिष्ट ने हिन्दी को भाषा ही नहीं बल्कि जीवन शैली व देश की गरिमा बताते हुए इसे देश की एकता, अखण्डता, सामुदायिक सद्भाव बनाये रखने के साथ देश के समग्र विकास के लिए आवश्यक बताया। डा. बिष्ट ने बताया कि विश्वविद्यालय में 90–95 प्रतिशत कार्य हिन्दी में होता है। उन्होंने जानकारी दी कि विश्वविद्यालय के प्रकाशन निदेशालय द्वारा अब तक 207 पुस्तकें हिन्दी में प्रकाशित की जा चुकी हैं। सामुदायिक रेडियो केन्द्र के प्रसारण 'पंतनगर जनवाणी' का हवाला देते हुए उन्होंने कहा कि इस माध्यम से हम क्षेत्रीय भाषाओं में भी कार्यक्रम प्रसारित कर रहे हैं, जिससे हिन्दी के विकास को बल मिलेगा। डा. बिष्ट ने बताया कि हिन्दी फिल्म तथा गीतों ने इस भाषा को विश्व स्तर तक पहुंचाने में मदद की। उन्होंने बताया कि वर्तमान में विश्व के लगभग 137 देशों में लगभग 1.5 करोड़ लोग हिन्दी बोलते हैं जो हिन्दी की शक्ति और लोकप्रियता का परिचायक है।

कुलसचिव, डा. जी.के. सिंह ने अपने संबोधन में कहा कि हमें हिन्दी के प्रसार के साथ–साथ व्याकरण पर भी ध्यान देना चाहिए। हिन्दी को एक जन–आंदोलन बनाने की जरूरत पर बालते हुए उन्होंने कहा कि इसके विकास के लिए प्रत्येक व्यक्ति को अपनी दिनचर्या में मातृ भाषा का प्रयोग करना होगा। कार्यक्रम में उपस्थित निदेशक संचार, डा. वीर सिंह ने कहा कि परिवर्तन के इस दौर में भी हिन्दी का वर्चस्व कायम है और यह विश्व में बोली जाने वाली भाषाओं में तीसरे स्थान पर है। उन्होंने कहा कि हिन्दी को आर्थिकी से जोड़ने पर ही इसका सम्पूर्ण विकास सम्भव है। डा. सिंह ने आगे कहा कि भाषा एक नदी के समान है जिसमें अधिकाधिक नए शब्दों का समावेश कर उसे सतत और विकसित बनाया जा सकता है। प्रकाशन निदेशालय के प्रभारी अधिकारी डा. नरेश कुमार ने आगन्तुकों का स्वागत करते हुए हिन्दी सप्ताह के अन्तर्गत आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं से संबंधित प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के दौरान कुलपति द्वारा पुरस्कार प्रदान किये गये। सामान्य हिन्दी ज्ञान प्रतियोगिता का प्रथम पुरस्कार कैम्पस स्कूल की सांगी पटेरिया को, द्वितीय पुरस्कार कैम्पस स्कूल की प्रांजलि सिंह को तथा तृतीय पुरस्कार कैम्पस स्कूल की ही कृति सिंह को प्राप्त हुए। स्वरचित कविता पाठ प्रतियोगिता में विद्यालय वर्ग में कैम्पस स्कूल की शैवा खान को प्रथम, कैम्पस स्कूल की आरजू कोहरा को द्वितीय तथा कैम्पस स्कूल की ही श्रुति त्रिवेदी को तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया। इसी प्रतियोगिता में विश्वविद्यालय वर्ग में मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय की छात्रा अनीता एवं कृषि महाविद्यालय की छात्रा ममता रौतेला को प्रथम पुरस्कार तथा उपेन्द्र, गृह विज्ञान महाविद्यालय, दीक्षा सती, कृषि महाविद्यालय, अजय पाण्डे, कृषि महाविद्यालय, विपिन, मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय एवं अविनाश शुक्ला प्रौद्योगिकी महाविद्यालय को द्वितीय पुरस्कार प्रदान किये गये। हिन्दी कहानी लेखन प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर सात बच्चे रहे जिनमें कैम्पस स्कूल की ऐश्वर्या श्रीवास्तव, प्रणीता जोशी, अंशिमा सैनी, श्रुति पंत एवं सानिया अरोरा, बालनिलियम जूनियर हाईस्कूल के प्रविन्द्र कुमार तथा सरस्वती विद्या मंदिर के आशीष

कुमार सम्मिलित थे। कार्यक्रम का संचालन प्रकाशन निदेशालय की संपादक, श्रीमती सीमा श्रीवास्तव ने किया तथा अंत में निदेशालय की संपादक, बिमलेश चौधरी ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

विश्वविद्यालय कर्मचारियों की विभिन्न खेल–कूद प्रतियोगिताओं के सफल प्रतिभागी सम्मानित

दिनांक 14 सितम्बर, 2011 को आयोजित स्टाफ स्पोर्ट्स क्लब के तत्वावधान में व ा 2010–11 में विभिन्न खेलकूद प्रतियोगिताओं के सफल प्रतिभागियों को एक समारोह में कुलपति डा. बी.एस.बि ट व अन्य अधिकारियों ने सम्मानित किया। इस मौके पर अपने संबोधन में डा. बि ट ने खेल प्रतियोगिताओं को व्यक्तित्व विकास हेतु विशे ा रूप से उपयोगी बताया। कृ ा महाविद्यालय के सभागर में आयोजित इस समारोह को सम्बोधित करते हुए डा. बि ट ने कहा कि खेल–कूद का माध्यम व्यक्तित्व विकास के साथ–साथ ाारीरिक विकास के लिए भी उपयुक्त होता है। इस अवसर पर उन्होंने एथलेटिक, क्रिकेट, बैडमिंटन व रस्साकसी प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतियोगियों को पुरस्कार प्रदान किया। उत्कृभट प्रदर्शन के आधार पर पुरस्कार पाने वालों में आर.आर.मौर्या, मुखलाल, कुसुम साह, बी.के सिंह, डा. जे.पी सिंह, अरूंधती कौशिक, एस.सी. पाण्डे, मनोज पंत, एस.एन.तिवारी, संजीव कुमार, डा. मंजुल काण्डपाल, मंजू जोशी, कृभण पाल, कविता सैनी, सुनील कुमार व सुमनलता यादव प्रमुख हैं। क्रिकेट प्रतियोगिता में विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय को पहला, एल.आई.सी. को दूसरा तथा निदेशक ाोध कार्यालय को तीसरे पुरस्कार से सम्मानित किया गया। बैडमिंटन के सिंगल में नरेश चौहान को पहला व डा. संदीप कुमार को दूसरा तथा डबल्स में नरेश चौहान व संदीप कुमार को पहले एवं डा. डी.पी. पंत व वी.के.मिश्रा को दूसरे स्थान के लिए सम्मानित किया गया। रस्साकसी के लिए प्रशासन भवन की टीम को पहला, छात्र कल्याण विभाग की टीम को दूसरा तथा परिवहन विभाग को तीसरे स्थान के लिए पुरस्कार प्रदान किया गया। इससे पूर्व उदयपुर में आयोजित अखिल भारतीय कुलपति चल–बैजयन्ती

वालीवॉल प्रतियोगिता में मिले स्मृति चिन्ह को टीम के प्रभारी अनिल सक्सेना ने कुलपति डा. बि ट को प्रदान किया। इस प्रतियोगिता में पंतनगर विश्वविद्यालय की टीम को उपविजेता का पुरस्कार प्राप्त हुआ था। इस अवसर पर कोलकाता में आयोजित कराटे प्रतियोगिता के स्वर्ण पदक विजेता सुदीश राय को भी कुलपति द्वारा सम्मानित किया गया। इस अवसर पर डा. ए.के. कर्नाटक ने आगन्तुकों का स्वागत करते हुए विश्वविद्यालय कर्मचारियों को खेल–कूद के लिए अधिक से अधिक सुविधायें देने का भी भरोसा दिलाया। कार्यक्रम के दौरान क्लब के सचिव डा. एस.पी. सिंह ने व ा भर चली विभिन्न प्रतियोगिताओं का संक्षिप्त प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन क्लब के संयुक्त सचिव योगेश पंत व ए.के. सिंह ने किया।

धान में तेजी से फैल रहे फुदका कीटों के नियंत्रण हेतु वैज्ञानिकों के सुझाव

जनपद उधमसिंह नगर के विभिन्न भागों तथा समीपवर्ती उत्तर प्रदेश के जिलों से विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों को प्राप्त हो रही खबरों के अनुसार इस क्षेत्र में धान की फसल में भूरा फुदका तथा सफेद पीठ वाले फुदके का प्रकोप दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है जिसके कारण किसान बहुत परेशान हैं। किसानों द्वारा तेला कहे जाने वाले इन कीटों के प्रकोप से धान की फसल धीरे धीरे पीली होकर सूख जाती है जिससे उन्हें काफी नुकसान उठाना पड़ जाता है। पिछले वर्ष इन कीटों का प्रकोप देखते देखते इतनी तेजी से फैल गया कि एक सप्ताह के अन्दर ही कई किसानों के खेत सूख गये। पंतनगर विश्वविद्यालय की अखिल भारतीय समन्वित धान सुधार परियोजना के समन्वयक तथा चावल ज्ञान प्रबंधन पोर्टल के नोडल आफिसर डा. एस.एन. तिवारी ने बताया है कि भूरा फुदका तथा सफेद पीठ

वाले फुदके के निम्फ तथा वयस्क कीट पौधे के तने पर सैकड़ों की संख्या में बैठ कर उसका रस चूसते हैं जिसके कारण पौधा पहले पीला पड़ जाता है और बाद में सूख कर जमीन पर गिर जाता है। डा. तिवारी ने किसानों को सलाह दी है कि वे अपने खेतों में जाकर कई स्थानों पर पौधे के तने को अच्छी प्रकार हिलायें ताकि यदि उस पर फुदका कीट बैठे हों तो गिर कर पानी पर तैरने लगें। तैरते हुए फुदकों की गिनती कर यदि प्रत्येक पौधे पर औसतन 10 फुदके से ज्यादा कीट दिखाई दें तो तुरन्त खेत से पानी निकालकर कीटनाशी रसायन का छिड़काव कर दें ताकि फुदको पर नियंत्रण पाया जा सके। विभिन्न क्षेत्रों से मिली जानकारी के अनुसार अब इन कीटों पर इमिडाक्लोप्रिड नामक दवा का कोई प्रभाव नहीं पड़ रहा है क्योंकि उसके विरूद्ध इनमें सहनशीलता पैदा हो गयी है। ऐसी परिस्थितियों में डा. तिवारी ने किसानों को यह सलाह दी है कि वे इन कीटों के नियंत्रण के लिए बुप्रोफेजिन 1 लीटर/हैक्टेयर 500 लीटर पानी में घोल कर पौधे के तने के पास छिड़काव करें तथा यदि सभी कीट न मरें तो दस दिन के बाद दोबारा छिड़काव कर दें। केवल पौधों की पत्तियों पर छिड़काव करने से इस कीट की रोकथाम नहीं हो पायेगी इसलिए नाजिल को अन्दर ले जाकर तने के पास छिड़काव करना आवश्यक है और इस के लिए प्रति हैक्टेयर पानी की मात्रा 500 लीटर से कम नहीं होनी चाहिए। इसलिए वैज्ञानिकों ने किसानों को यह सलाह दी है कि अच्छी कम्पनियों के अधिकृत विक्रेताओं से ही दवा खरीदकर उसका उपयोग करें और दवा खरीदते समय उसकी पर्ची भी ले लें ताकि उन्हें सही दवा मिल सके। दवा खरीदने के पहले निर्माण की तिथि तथा उसकी समाप्ति की तिथि जरूर देख लें तथा कभी भी ऐसी दवा न खरीदें जिसके उपयोग की तिथि समाप्त हो गयी हो।

वैज्ञानिकों ने तोरिया की खेती के लिए उन्नत किस्म 'उत्तरा' के प्रयोग का सुझाव दिया

तोरिया की बुवाई की योजना बना रहे किसानों को यह जानकारी होना आवश्यक है कि तोरिया की बुवाई का सही समय सितम्बर का दूसरा पखवाड़ा है। यानि कि 15–30 सितम्बर के बीच इसकी बुवाई कर लेनी चाहिए। देरी से बुवाई करने पर पैदावार में एक कुन्तल प्रति हैक्टेयर प्रति सप्ताह तक की हानि हो सकती है। पंतनगर विश्वविद्यालय के आनुवांशिक एवं पादप प्रजनन विभाग के वैज्ञानिक डा. राम भजन के अनुसार तोरिया की कुछ महत्वपूर्ण प्रजातियों, पीटी–303, पीटी–507, वीएलटी–3, पीटी–30 एवं उत्तरा, का प्रयोग किया जा सकता है। उत्तराखण्ड के तराई एवं मैदानी क्षेत्रों में वर्ष 2008 में अनुमोदित की गई प्रजाति 'उत्तरा' के प्रयोग से अच्छा उत्पादन लिया जा सकता है। इसकी पत्तियों का रंग हल्का हरा एवं फूल का रंग पीला होता है, पौधों की ऊँचाई 129.47 से.मी. होती है। तोरिया की बुवाई के लिए पर्याप्त नमी का होना जरूरी है। लाइन में बुवाई के लिए 4 कि.ग्रा. प्रति हैक्टेयर या 80–100 ग्राम प्रति नाली की दर से बीज का प्रयोग करना चाहिए। छिटकवां विधि से बुवाई के लिए बीज की दर 30 प्रतिशत तक घटा देनी चाहिए क्योंकि किसान विरलीकरण नहीं करते। बुवाई से पहले बीज का जमाव प्रतिशत अवश्य देखा जाना चाहिए ताकि अगर जमाव कम हो तो बीज दर बढ़ा ली जाए। यदि प्रमाणित बीज नहीं है तो बीज का शोधन किया जाना चाहिए। बीजोपचार हेतु 2.5 ग्राम थायरम या 2.5 ग्राम कार्बेन्डाजिम प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से प्रयोग किया जाना चाहिए। तोरिया में मृदुरोमिल आसिता तथा सफेद फफोला रोग की संभावना रहती है अतः इनकी रोकथाम के लिए रिडोमिल की 6 ग्राम मात्रा प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से प्रयोग करनी चाहिए। उर्वरकों का प्रयोग मृदा परीक्षण के आधार पर ही किया जाना चाहिए। नाइट्रोजन की आधी मात्रा तथा फासफोरस एवं पोटाश की पूरी मात्रा अंतिम जुताई करते समय खेत में मिलाना चाहिए। नाइट्रोजन की शेष आधी मात्रा पहली सिंचाई के बाद टापड्रेसिंग के रूप में दिया जाना चाहिए। वर्षाधीन क्षेत्रों में सभी उर्वरकों की पूरी मात्रा बुवाई के समय पर ही दे देना चाहिए। फासफोरस

के लिए सिंगल सुपर फास्फेट का प्रयोग किया जाना चाहिए। इसकी उपलब्धता न होने पर यदि डाई–अमोनियम फास्फेट (डी.ए.पी.) का प्रयोग करना पड़ता है तो 200 कि.ग्रा. जिप्सम प्रति हैक्टेयर की दर से आखिरी जुताई के समय छिड़क कर मिट्टी में मिला दिया जाना चाहिए। इसके अलावा जैविक खाद या गोबर की सड़ी खाद 100 कुन्तल प्रति हैक्टेयर की दर से बुवाई से एक माह पूर्व खेत में डालकर अच्छी तरह मिला दिया जाना चाहिए। साथ ही बुवाई के 15–20 दिनों के अंदर घने पौधों को निकालकर पौधे से पौधे की दूरी 10–15 से.मी. कर देनी चाहिए। इस तरह से अगर तोरिया की ठीक ढंग से खेती की जाए तो 90–95 दिन में तैयार होने वाली इस फसल से एक अच्छा उत्पादन लिया जा सकता है।

विश्वविद्यालय एवं कुलपति सम्मानित

नॉलेज रिसोर्स डवलपमेंट एवं वेलफेयर ग्रुप ने विश्वविद्यालय के कुलपति डा. बी. एस. बिष्ट को 'एजूकेशलन लीडरशिप–2011' पुरस्कार से सम्मानित किया है। यह पुरस्कार कुलपति डा. बिष्ट को उनके शिक्षा के क्षेत्र में अनुपम योगदान एवं विशिष्ट सेवाओं के लिए दिया गया है। दूसरा पुरस्कार विश्वविद्यालय को 'मल्टी डिस्सी–प्लीनरी साइंसेज ऑफ एग्रीकल्चर बेसिक साइंसेस एवं टैक्नोलॉजी' पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। उक्त दोनों पुरस्कार इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टैक्नोलॉजी में आयोजित 'हॉलिस्टिक एजुकेशन इन प्रोफेसनल एण्ड टैक्नीकल इंस्टीट्यूशंस' विषयक संगोष्ठी के अवसर पर दिया गया। विश्वविद्यालय को प्राप्त इन दो महत्वपूर्ण पुरस्कारों के लिए अधिष्ठाताओं और निदेशकों की बैठक में कुलपति जी को बधाई दी गई।

नवागन्तुक छात्रों का अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित

दिनांक 19 अगस्त, 2011 को मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय में नवागन्तुक छात्रों का अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि, माननीय कुलपति डा. बी.एस. बिष्ट ने नवागन्तुक विद्यार्थियों को ख्याति प्राप्त विश्वविद्यालय में प्रवेश प्राप्ति के लिये बधाई दी तथा उज्जवल भविष्य के लिये शुभकामनाएं दी। कुलपति ने विश्वविद्यालय की उपलब्धियों, हरित क्रान्ति में विश्वविद्यालय के योगदान, उसके द्वारा स्वर्ण जयन्ती मनाये जाने, विश्वविद्यालय द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय स्कूल, अपने सामुदायिक रेडियो केन्द्र की शुरूआत आदि के बारे जानकारी दी। भविष्य के कार्यक्रमों जैसे कि अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षण संस्थानों के सहयोग से दोहरी उपाधि तथा दूसरी हरित क्रान्ति जैसे विषयों पर भी प्रकाश डाला तथा छात्रों को स्वस्थ मानसिक एवं शारीरिक विकास के लिये भी शुभकामनाएं दी। कार्यक्रम का शुभारम्भ मत्स्य संकाय के परिचय से किया गया। वरिष्ठ एवं नवागन्तुक छात्रों ने भी अपना परिचय तथा अभिरूचि के बारे में बताया। डा. राज नरायन राम ने शैक्षणिक नियम, डा. आर.एस. चौहान ने पराशैक्षिक तथा अतिरिक्त गतिविधियों के बारे में बताया। डा. ए.के. उपाध्याय ने अनुशासन एवं आचरण तथा स्टॉफ कॉउसलर डा. मालविका दास ने परीक्षा प्रणाली के बारे में जानकारी दी। अधिष्ठाता छात्र कल्याण डा. ए.के. कर्नाटक ने उस दिन सद्भावना दिवस के उपलक्ष्य में सभी को बधाई दी तथा छात्रों के आत्म अनुशासन पर जोर दिया तथा विश्वविद्यालय द्वारा उपलब्ध करायी जाने वाली तथा अन्य विभिन्न छात्रवृत्तियों के बारे में बताया। अधिष्ठाता, डा. आई.जे. सिंह ने प्रथम वर्ष के छात्रों सहित सभी का महाविद्यालय में स्वागत किया तथा महाविद्यालय की विभिन्न गतिविधियों एवं प्रगति से अवगत कराते हुए छात्रों से अपने मानसिक एवं व्यक्तित्व विकास के साथ–साथ प्रदेश एवं राष्ट्र के विकास के लिए भी कार्य करने के लिए आह्वान किया।

मीनाक्षी भवन में कृष्ण जन्मोत्सव का आयोजन

एक नई परंम्परा की शुरूआत करते हुए इस बार मीनाक्षी भवन छात्रावास, नगला में एम. टेक और मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय के छात्रों ने बड़ी धूमधाम से कृष्ण जन्मोत्सव का आयोजन किया। छात्रों ने हवन करके इस आयोजन का शुभारम्भ किया। महाआरती, हांडी फोड़ना और भजन संध्या इस आयोजन का मुख्य आकर्षण रहे। भजन संध्या में छात्रों ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया और भगवत गीता

के श्लोको का विधि पूर्वक पाठ किया। इस अवसर पर अधिष्ठाता, मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय, डा. आई. जे. सिंह, विभागाध्यक्ष डा. ए.के. उपाध्याय, अभिरक्षक डा. विपुल गुप्ता और विवेकानन्द के अभिरक्षक डा. आशुतोष मिश्रा आदि ने पहुँचकर छात्रों का उत्साहवर्धन किया और पूजा अर्चना में भाग लिया। इस आयोजन को सफल बनाने में छात्रावास के छात्रों ने सराहनीय एकजुटता और सहयोग का परिचय दिया। कार्यक्रम के आयोजन में रामबाबू, अविनाश, रंजीत, अश्वनी, अभिषेक, चेतन, विपिन, संदीप, निरंजन, अरूणोदय, राहुल, आदि छात्रो ने महत्वपूर्ण सहयोग दिया।

गृह विज्ञान महाविद्यालय में खाद्य एवं पो ाण सप्ताह आयोजित

दिनांक 1–7 सितम्बर, 2011 तक गृह विज्ञान महाविद्यालय में खाद्य एवं पो ाण विभाग द्वारा पो ाण सप्ताह का आयोजन किया गया। इसके अंतर्गत पो ाण क्विज, रेसिपी कम्पटीशन व अन्य कार्यक्रम आयोजित किये गये। इन कार्यक्रमों में महिला क्लब की सदस्यों एवं विश्वविद्यालय के विभिन्न महाविद्यालयों के स्नातक पाठ्यक्रम में अध्ययनरत विद्यार्थियों ने भरपूर भागीदारी की। कार्यक्रम का आयोजन खाद्य एवं पो ाण विभाग के अध्यापकों के निर्देशन में स्नातकोत्तर छात्र एवं छात्राओं द्वारा किया गया।

सेवायोजन तथा परामर्श निदेशालय :

- नैनीताल दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लि. लालकुंआ (नैनीताल) द्वारा बी.वी.एस.सी.एण्ड ए.एच.छात्रों से, मै. देवगन सीड्स एण्ड क्राप टैक्नोलाजी प्रा.लि., सिकन्दराबाद द्वारा एम.एस.सी.एजी. छात्रों से, मै. मन्जूश्री प्लान्टेशन लि., नीलगिरी द्वारा बी.एस.सी.एजी. छात्रों से तथा मैत्र हैन्ज इंडिया प्रा.लि., सितारगंज द्वारा बी.एस.सी.एजी. / बी.एस.सी. (फूड टैक्नोलाजी) छात्रों से बायोडाटा आमंत्रित किये गये हैं।
- दिनांक 21 सितम्बर से 1 अक्टूबर, 2011 तक स्नातक एवं स्नातकोत्तर छात्रों के लिए साफ्ट स्किल डवलपमेन्ट हेतु एवं जे.आर.एफ. / एस.आर.एफ. परीक्षा हेतु कोचिंग प्रारम्भ की जा रही है।

संरक्षक : डा. बी.एस. बिष्ट कुलपति
प्रबंध संपादक : डा. वीर सिंह निदेशक संचार
संपादक : भीष्म सिंह वैयक्तिक सहायक
संपादन सहयोग : दिनेश चन्द्र संचार केन्द्र